निकोलाई नोसोव

लुका-छिपी

निकोलाई नोसोव

लुका-छिपी
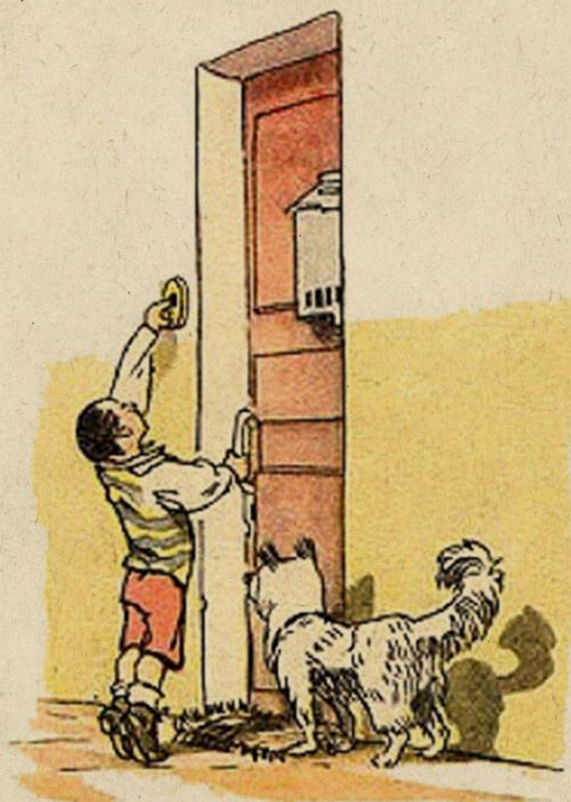
चित्र: ए. केनवस्की

अंग्रेजी अनुवाद: जिम रिओर्डन

हिंदी: अरविन्द गुप्ता

वित्या और स्लाविक पड़ोसी थे.

वे हमेशा एक-दूसरे से मिलने के लिए आते-जाते रहते थे.

एक दिन जब वित्या, स्लाविक से मिलने आया तब स्लाविक ने उससे कहा:

"चलो लुका-छिपी खेलते हैं!"
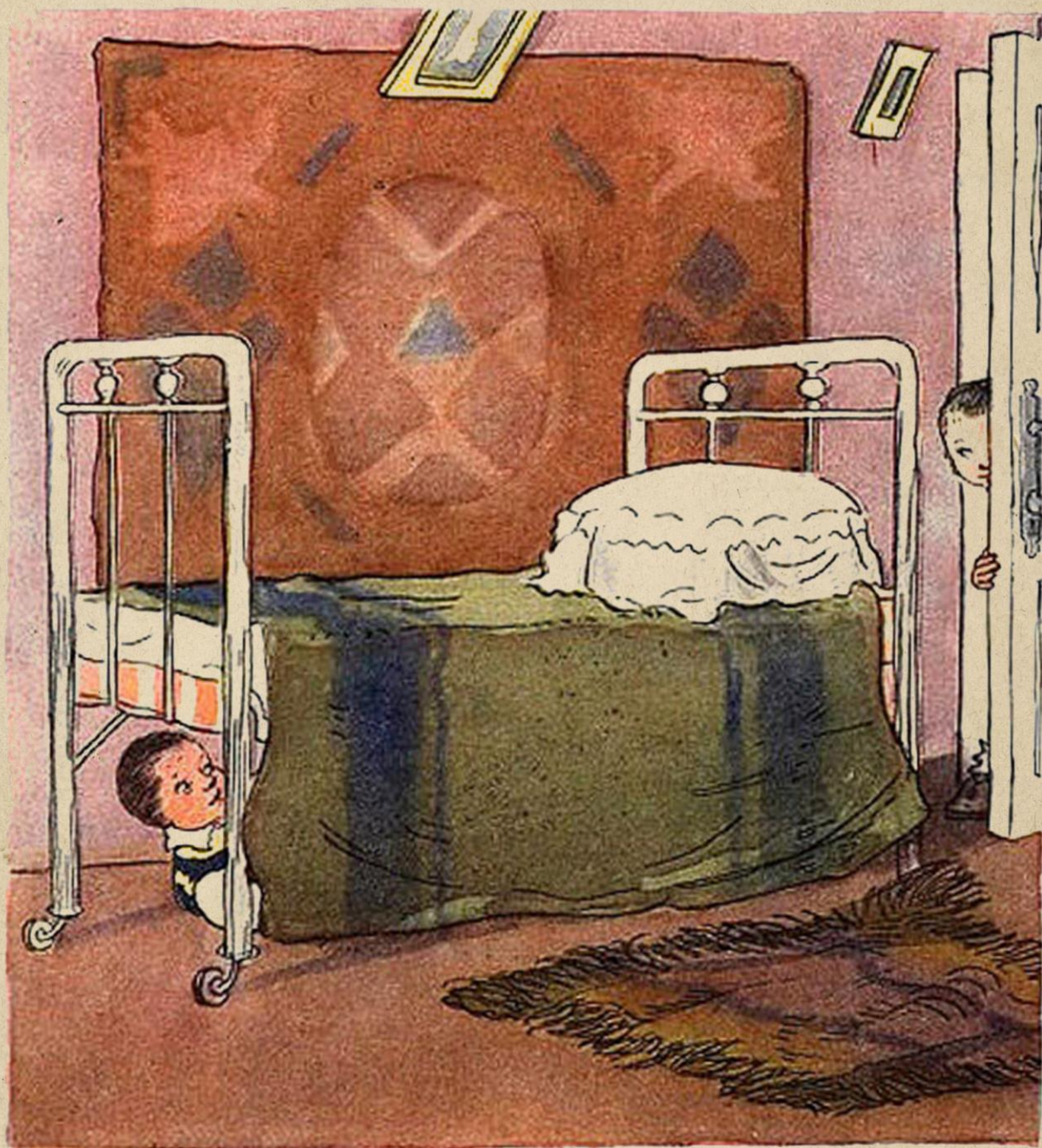
"ठीक है," वित्या ने कहा. "मैं पहले छिपूंगा."

“चलो ठीक है, मैं तुम्हें खोजने की कोशिश करूंगा," स्लाविक ने कहा और फिर वो गलियारे में चला गया.

वित्या कमरे में भागा. वो बिस्तर के नीचे रेंगकर छिप गया और चिल्लाया:

"तैयार!"

स्लाविक अंदर आया. उसने बिस्तर के नीचे देखा और वित्या को तुरंत ढूंढ लिया. वित्या शिकायत करते हुए रेंगकर बाहर आया:

"यह ठीक नहीं है! देखो, मैं ठीक से नहीं छिप पाया था! अगर मैं ठीक से छिपा होता तो तुम मुझे नहीं ढूंढ पाते. चलो, मैं फिर से छिपता हूं."

"ठीक है, अगर तुम चाहो तो फिर से छिप जाओ," स्लाविक ने सहमति जताई और वो फिर से गलियारे में वापस चला गया.

वित्या छिपने के लिए जगह की तलाश में यार्ड में भाग गया. शेड के पास उसने कुत्ते का घर (केनेल) दिखाई दिया जिसमें बॉबिक कुत्ता था. उसने जल्दी से बॉबिक को केनेल से बाहर खदेड़ा, और फिर खुद केनेल के अंदर घुस गया और चिल्लाया:

"तैयार!"

स्लाविक यार्ड में आया और वित्या को ढूँढ़ने लगा. उसने तमाम कोशिश की लेकिन वो उसे नहीं ढूँढ़ पाया.

कुछ देर बाद वित्या कुत्ते के घर के अंदर बैठे रहने से तंग आ गया और वो बाहर झाँकने लगा. तब स्लाविक ने उसे देखा और चिल्लाया:
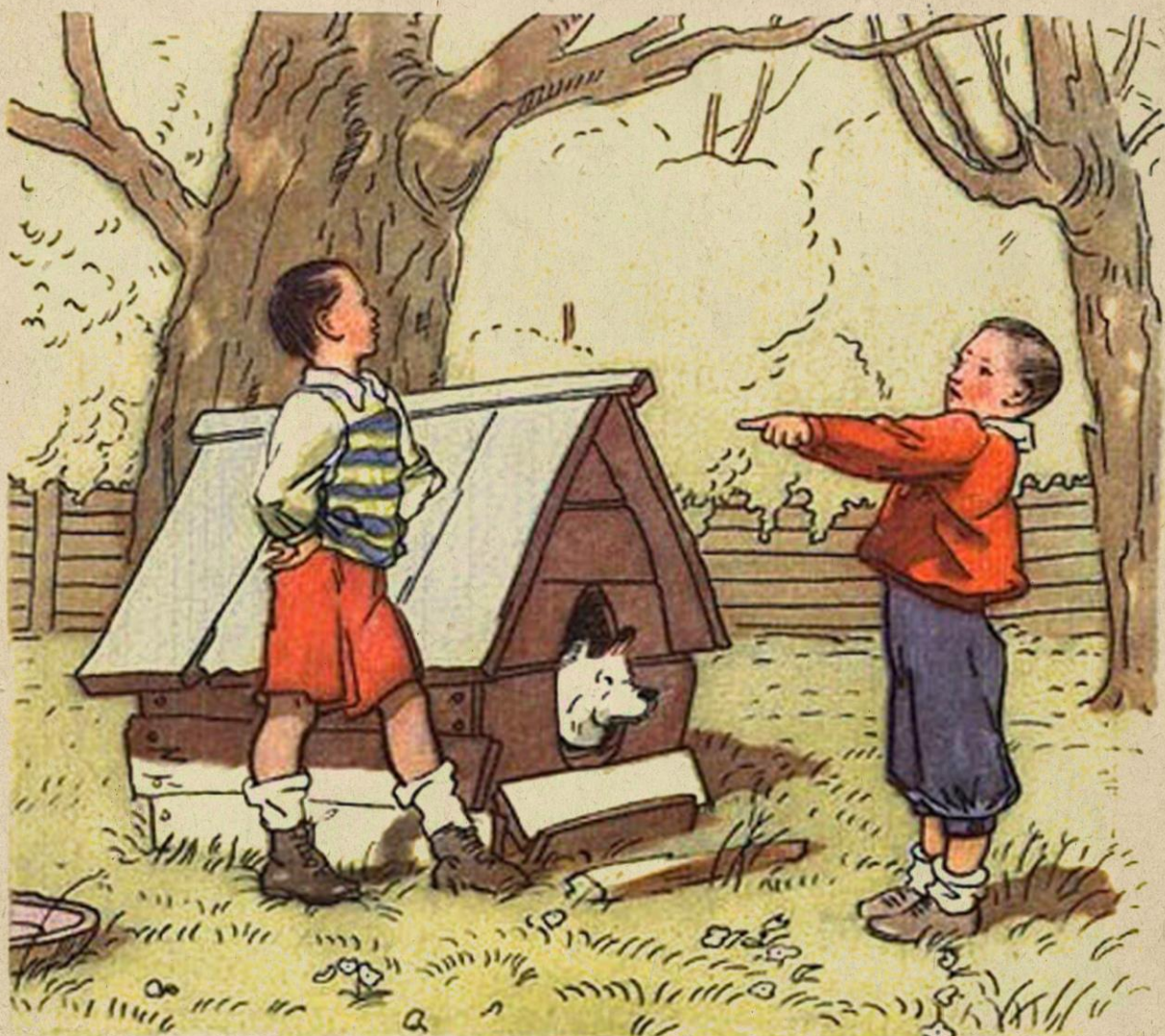
"तो तुम वहां हो! चलो बाहर आओ!" वित्या कुत्ते के घर से बाहर रेंगकर आया और बोला:

"यह ठीक नहीं है! तुम मुझे खोज नहीं पाए. मैंने खुद ही अपना सिर बाहर निकाला था."

"अच्छा यह बताओ, कि तुमने अपना सिर बाहर क्यों निकाला?"

"मैं कुत्ते के घर में झुककर बैठे-बैठे थक गया था. अगर मैं उकड़ू न बैठा होता तो तुम मुझे कभी नहीं ढूँढ़ पाते. चलो, मैं फिर से छिपता हूं."

"नहीं, अब छिपने की मेरी बारी है," स्लाविक ने कहा.

"फिर मैं बिल्कुल नहीं खेलूँगा!" वित्या ने झल्लाकर कहा.

"चलो, ठीक है, अगर तुम्हें फिर से छिपना ही है तो छिप जाओ," स्लाविक ने हार मान ली.

वित्या कमरे में भागा और उसने दरवाज़ा बंद कर लिया. फिर कपड़ों के स्टैंड के पीछे चढ़ गया और एक कोट के नीचे छिप गया. स्लाविक फिर से उसे ढूँढ़ने लगा. जैसे ही उसने दरवाज़ा खोला, कुत्ता बोबिक कमरे मे अंदर घुस गया और कपड़ों के स्टैंड पर चढ़कर वित्या को चूमने लगा. वित्या ने गुस्से में कुत्ते को लात मारकर दूर कर दिया.

"तो तुम यहाॅ हो! कपड़ों के पीछे! तुम बाहर आओ!" वित्या रेंगकर बाहर आया और बोला:

"यह ठीक नहीं है! तुम मुझे नहीं खोज पाए. वो तो बोबिक था जिसने मुझे ढूंढ निकाल. अब मैं दुबारा फिर से छिपूंगा!"

"नहीं तुम इस बार नहीं छिप सकते," स्लाविक ने कहा. "तुम बार-बार छिपते हो, और मैं ही तुम्हें हर बार तुम्हें ढूँढता हूं."

"ठीक है, बस एक बार तुम मुझे और ढूँढो, उसके बाद तुम छिपना," वित्या ने कहा.
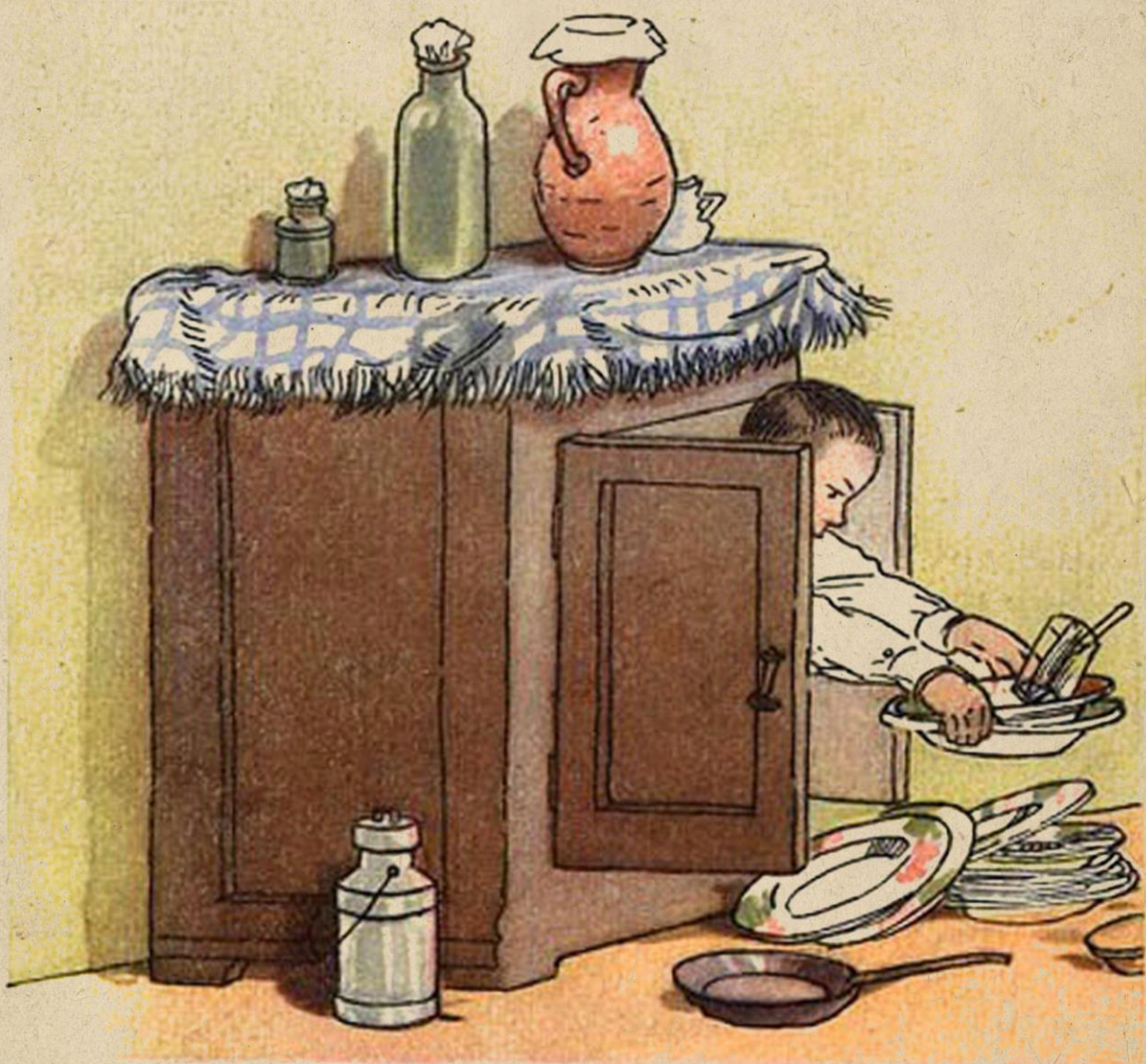
स्लाविक ने फिर से अपनी आँखें बंद कर लीं. इस बार वित्या रसोई में भागा. उसने अलमारी में से सारे चीनी-मिट्टी के बर्तन बाहर निकाले, फिर खुद उसके अंदर छिप गया और चिल्लाया:

"तैयार!"

स्लाविक रसोई में घुसा. जब उसने फर्श पर चीनी-मिट्टी के बर्तन फैले देखे तो उसने तुरंत अनुमान लगा लिया कि वित्या वहीं छिपा होगा. स्लाविक चुपचाप अलमारी तक गया, और उसने बाहर से अलमारी की कुंडी लगा दी, फिर आँगन में भागा और बोबिक के साथ लुका-छिपी खेलने लगा. स्लाविक छिपा और बोबिक ने उसे ढूँढ़ा.

"यह बढ़िया है!" स्लाविक ने सोचा. "बॉबिक के साथ खेलना वित्या से ज़्यादा मज़ेदार है."

थोड़ी देर बाद वित्या अलमारी में बैठे-बैठे थक गया. उसने बाहर निकलने की कोशिश की, लेकिन उससे दरवाज़ा ही नहीं खुला.

फिर वह डर गया और चिल्लाने लगा:

"स्लाविक! स्लाविक!"

स्लाविक ने उसकी आवाज़ सुनी और वो अंदर भागा.

"मुझे यहाँ से बाहर निकालो!" वित्या चिल्लाया. "दरवाज़ा नहीं खुल रहा है."

"अगली बार अगर तुम मुझे ढूंढोगे तभी मैं तुम्हें बाहर निकालूंगा."

"देखो तुम मुझे नहीं ढूंढ पाए मैं फिर मैं तुम्हें क्यों ढूंढूंगा."

"लेकिन इस बार तो मैं तुम्हें ढूँढ़ पाया."

"तुमने मुझे नहीं ढूंढा. मैं खुद ही चिल्लाया. अगर मैं नहीं चिल्लाया होता, तो तुम मुझे कभी नहीं ढूंढ पाते."

"ठीक है फिर तुम अलमारी के अंदर ही रहो. मैं जाकर बाहर खेलूँगा," स्लाविक ने कहा.

"तुम्हें ऐसा नहीं कर सकते!" वित्या चिल्लाया. "दोस्तों के साथ ऐसा नहीं करते."

"फिर मैं ही हर बार तुम्हें ढूंढूं, भला यह कैसी दोस्ती है?"

"हाँ, वो है."

"अच्छा अब तुम सारा दिन अलमारी में रह सकते हो."

"ठीक है, इस बार मैं तुम्हें ढूढूंगा पर पहले तुम मुझे बाहर तो निकालो," वित्या ने विनती की.

स्लाविक ने कुंडी खोली. फिर वित्या बाहर निकला. कुंडी को खुले देखकर वो बोला:

"देखो तुमने मुझे जानबूझकर अलमारी में बंद किया? अब मैं तुम्हें नहीं ढूढूंगा!"

"अच्छा भाई मत खेलो," स्लाविक ने कहा. "मुझे तुम्हारी बजाए बोबिक के साथ खेलना ज़्यादा पसंद है."

"लेकिन बोबिक तुम्हें नहीं ढूंढ सकता है, क्यों है न?"

"नहीं वो मुझे ढूंढ सकता है. वह तुमसे कहीं बेहतर है!"

"फिर चलो, हम दोनों छिपेंगे और बोबिक से हमें खोजेगा."

फिर वित्या और स्लाविक आँगन में गए और बोबिक से छिपने लगे. बोबिक लुका-छिपी खेलने में काफी अच्छा था, लेकिन वह अपनी आँखें कसकर बंद नहीं रख पाता था.
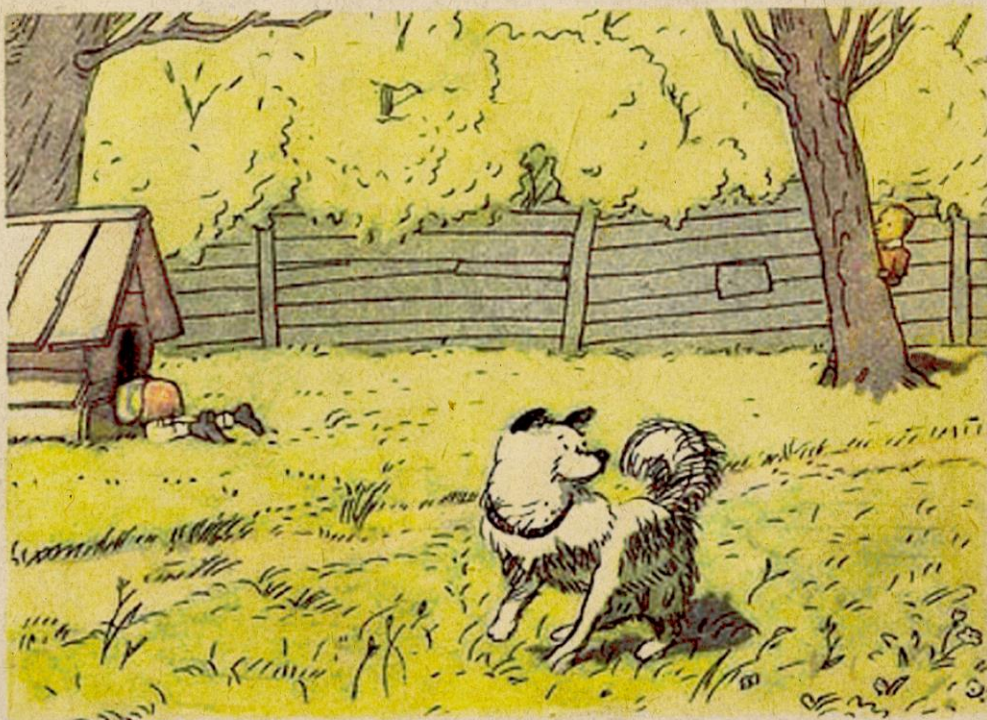
अमिनादाव मोइसेविच कानेव्स्की - कलाकार और चित्रकार

रूस में जन्म, 17 मार्च, 1898.

1976 में यूएसएसआर में मृत्यु.

आरएसएफएसआर के पीपुल्स आर्टिस्ट (1966), यूएसएसआर एकेडमी ऑफ आर्ट्स के सदस्य (1962).

यूक्रेनी जिले के शहर एलिसावेटग्राद (किरोवोग्राद) में जन्मे. 1921 में, कानेव्स्की को, उनकी सैन्य इकाई ने उन्हें VKHUTEMAS में अध्ययन करने के लिए भेजा. 1924 में, श्रमिकों के संकाय से स्नातक होने के बाद, उन्हें उसके ग्राफिक विभाग में काम मिला. उन्होंने पी. या. पावलिनोव, एन. एन. कुप्रेयानोव, वी. ए. फेवरस्की, डी. एस. मूर के साथ अध्ययन किया. वो क्रांतिकारी रूस के कलाकारों के संघ के सदस्य भी रहे.

कानेव्स्की के पहले चित्र 1924 में "बेज़बोज़निक यू स्टैंका" पत्रिका में छपे. बीस के दशक के उत्तरार्ध में, उन्होंने "पायनियर" और "दाएश" पत्रिकाओं में, "कोम्सोमोल्स्काया प्रावदा" समाचार पत्र में और 1930 के दशक के मध्य से - "क्रोकोडिल" में लगातार काम किया. सोवियत लोगों की कई पीढ़ियाँ इस कलाकार द्वारा चित्रित पुस्तकों पर पली-बढ़ी. ए. एन. टॉल्स्टॉय द्वारा "द गोल्डन की, या द एडवेंचर्स ऑफ़ बुराटिनो" के लिए उन्होंने चित्र, 1940 के दशक के उत्तरार्ध में बनाए. तब से वे चित्र कई बार पुनर्मुद्रित हुए हैं. उन्हीं वर्षों में, उन्होंने के. आई. चुकोवस्की की "मोयडोडायर" और "कॉकरोच" के लिए भी चित्र बनाए. कुछ समय बाद उन्होंने एस. या. मार्शक की “हियर इज सच एन ऐब्सेन्ट माइन्डिड मैन”, ए.एल. बार्टो और एस.वी. मिखालकोव की पुस्तकों, वी.वी. मायाकोवस्की द्वारा रचित "सैटाइअर", एन.एन. नोसोव द्वारा "ए हैप्पी फैमिली" और "वाइटा मालेव एट स्कूल एंड एट होम" के लिए चित्र उकेरे.

अमीनादव कानेव्स्की ने पारंपरिक रूप से समृद्ध रचनात्मक विरासत का प्रतिनिधित्व करने वाली पुस्तकों और पत्रिकाओं में चित्रों के अलावा, 1930-1960 से स्वतंत्र रूप से चित्र बनाए, जो आज भी दर्शकों के लिए लगभग अज्ञात हैं. ये कार्य प्रसिद्ध कलाकार के व्यक्तित्व को बहुत ही अप्रत्याशित पक्ष से प्रकट करते हैं, और उन्हें परिदृश्य के एक मास्टर और एक प्रतिभाशाली चित्रकार के रूप में प्रकट करते हैं. 1937 में, उन्होंने मुर्ज़िल्का नाम के एक पात्र का चित्र बनाया, जो पूरे रूस में प्रसिद्ध हुआ - लाल रंग की टोपी पहने एक पीले रंग का छोटा लड़का, जिसके गले में स्कार्फ और कंधे पर एक कैमरा लटका था. अमीनादव कानेव्स्की की मृत्यु मास्को में हुई और उन्हें गोलोविंस्कॉय कब्रिस्तान में दफनाया गया.